वार्षिक प्रतिवेदन
2012–2013

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्,
(पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्त परिषद्)
देहरादून (उत्तराखण्ड)

संरक्षक:
डॉ. एस.एस. गर्ब्याल, भा.व.से.
महानिदेशक
भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्,
देहरादून

सम्पादक मण्डल:
शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प.
विवेक खाण्डेकर, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार), भा.वा.अ.शि.प.
रमाकान्त मिश्र, अनुसन्धान अधिकारी, (मीडिया एवं विस्तार), भा.वा.अ.शि.प.

प्रकाशित:
मीडिया एवं विस्तार प्रभाग
विस्तार निदेशालय
भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ऑ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून-248 006 (उत्तराखण्ड), इंडिया

मुद्रक :
एलाइड प्रिंटर्स,
84, नहर वाली गली, देहरादून

आवरण पृष्ठ :

1. *एलन्थस एक्सेल्सा* में परागणकर्ता - व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर
2. पनामपली में *थैस्पीसिया* के क्लोनीय बहुलीकरण क्षेत्र - व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर
3. *टीरोकार्पस मार्सूपीयम* की छाल का संग्रहण - उ.व.अ.सं., जबलपुर
4. *पोंगैमिया पिन्नाटा* के चयनित कैन्डीडेट धन वृक्षों की जड़ वाली कलमें - व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर

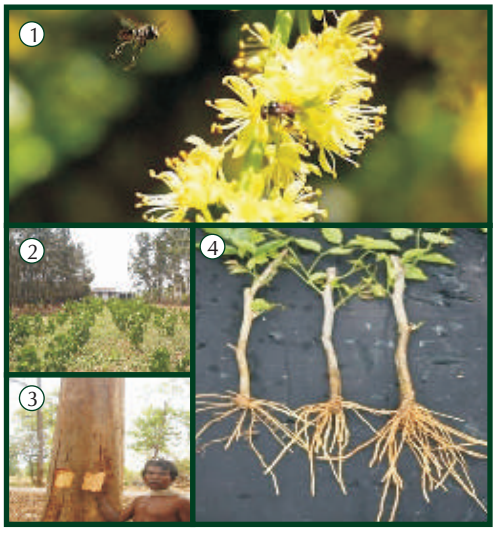

सत्यमेव जयते

डॉ एस. एस. गर्ब्याल, भा.व.से
महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.
तथा कुलाधिपति, वन अनुसन्धान संस्थान–सम–विश्वविद्यालय
Dr. S.S. Garbyal,IFS
Director General, ICFRE
and Chancellor, FRI University

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार
(आईएसओ 9001:2000 प्रमाणित संस्था)
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून–248 006 (उत्तराखण्ड)
Indian Council of Forestry Research and Education
Ministry of Environment and Forests,
Government of India
(An ISO 9001-2000 Certified Organisation)
P.O. New Forest, Dehra Dun - 248 006 (Uttarakhand)

प्राक्कथन

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् (भा.वा.अ.शि.प.), देहरादून वानिकी सैक्टर में एक अग्रणी संस्था है जो विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में स्थित अपने 9 संस्थानों एवं 4 केन्द्रों में किये जा रहे वैज्ञानिक अनुसंधान पर आधारित वानिकी संसाधनों के विकास एवं धारणीय प्रबंधन हेतु वानिकी अनुसंधान, शिक्षा एवं विस्तार के समग्र विकास में सक्रिय रूप से लगी हुई है।

भा.वा.अ.शि.प. एक ओर जलवायु परिवर्तन, जैवविविधता तथा प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन सहित वानिकी सैक्टर में अति महत्वपूर्ण उभरते हुए मामलों को सुलझाने तथा दूसरी ओर प्राकृतिक संसाधनों तथा उनके उपयोग के मध्य एक सकारात्मक परस्पर निर्भरता वाले सम्बन्ध के लिए समाज के गरीब वर्ग के उत्थान के लक्ष्य को लेकर आजीविका के नई रास्तों की खोज कर रहा है। ''विजन 2040'' जो इस वर्ष प्रकाशित की गई है, भविष्य में अनुसन्धान के लिए रूपरेखा तथा दिशाएं प्रदर्शित करती है।

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा किये गये अनुसन्धान को विभिन्न पणधारियों जैसे वन विभाग, किसानों तथा उद्योगों को इसके वन विज्ञान केन्द्रों के द्वारा साधारण नवप्रवर्तनकारी प्रौद्योगिकियों के रूप में हस्तांतरित किया जाता है। आई.सी.ए.आर. के कृषि विज्ञान केन्द्रों को वन विज्ञान केन्द्रों के साथ समबद्ध करने की रणनीति जो कि अनुसन्धान खोजों तथा प्रौद्योगिकियों के वृहद प्रचार के लिए अपनाई गई थी, अच्छे परिणाम दे रही है। इसके अतिरिक्त भा.वा.अ.शि.प. किसानों में भा.वा.अ.शि.प. द्वारा विकसित उत्पादों के प्रचार के लिए अपने संस्थानों में वृक्ष उत्पादक मेला आयोजित करवाता है। परिषद् संरक्षण तथा पारि–पुर्नस्थापन के लिए परामर्शी सेवाएं उपलब्ध करवाता है जो कम्बोडिया में ता प्रोम मन्दिर तथा भारत में बोधगया के बोधि वृक्ष को दी गई है। भा.वा.अ.शि.प. को कर्नाटक सरकार द्वारा बेल्लारी, तुमकुर तथा चित्रदुर्ग जिलों के खनन प्रभावित क्षेत्रों के पुनरूद्धार एवं पुनर्स्थापन योजना की तैयारी का कार्य सौंपा गया है। अभी तक परिषद् द्वारा 70 पुनरूद्धार तथा पुर्नस्थापन योजनाएं तैयार की गई है तथा माननीय सर्वोच्च न्यायालय की सी.ई.सी. द्वारा अनुमोदित की गई है।

भारत में वानिकी शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए वानिकी शिक्षा कार्यक्रमों तथा संरचना विकास के लिए वानिकी शिक्षा दे रहे विभिन्न विश्वविद्यालयों को मौद्रिक अनुदान उपलब्ध करवाया जाता है। परिषद् भारत का प्रतिनिधित्व करती है तथा अन्य संस्थानों के साथ ज्ञान बांटने के लिए विभिन्न राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में सहभागिता करती है। इसने कुछ प्रशंसित प्रकाशन जैसे ''फॉरेस्ट बायोडाइवर्सिटी इन इंडिया'', "फॉरेस्ट टाईप ऑफ इंडिया रिविजिटेड'' तथा अन्य प्रकाशन प्रकाशित किये है।

यह मेरा सौभाग्य है कि मैं वार्षिक प्रतिवेदन 2012–13 प्रस्तुत कर रहा हूँ जो 2012–13 के दौरान हुई भा.वा.अ.शि.प. की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण उपलब्ध करवाती है।

(डॉ. एस.एस. गर्ब्याल)

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् की संगठनात्मक संरचना

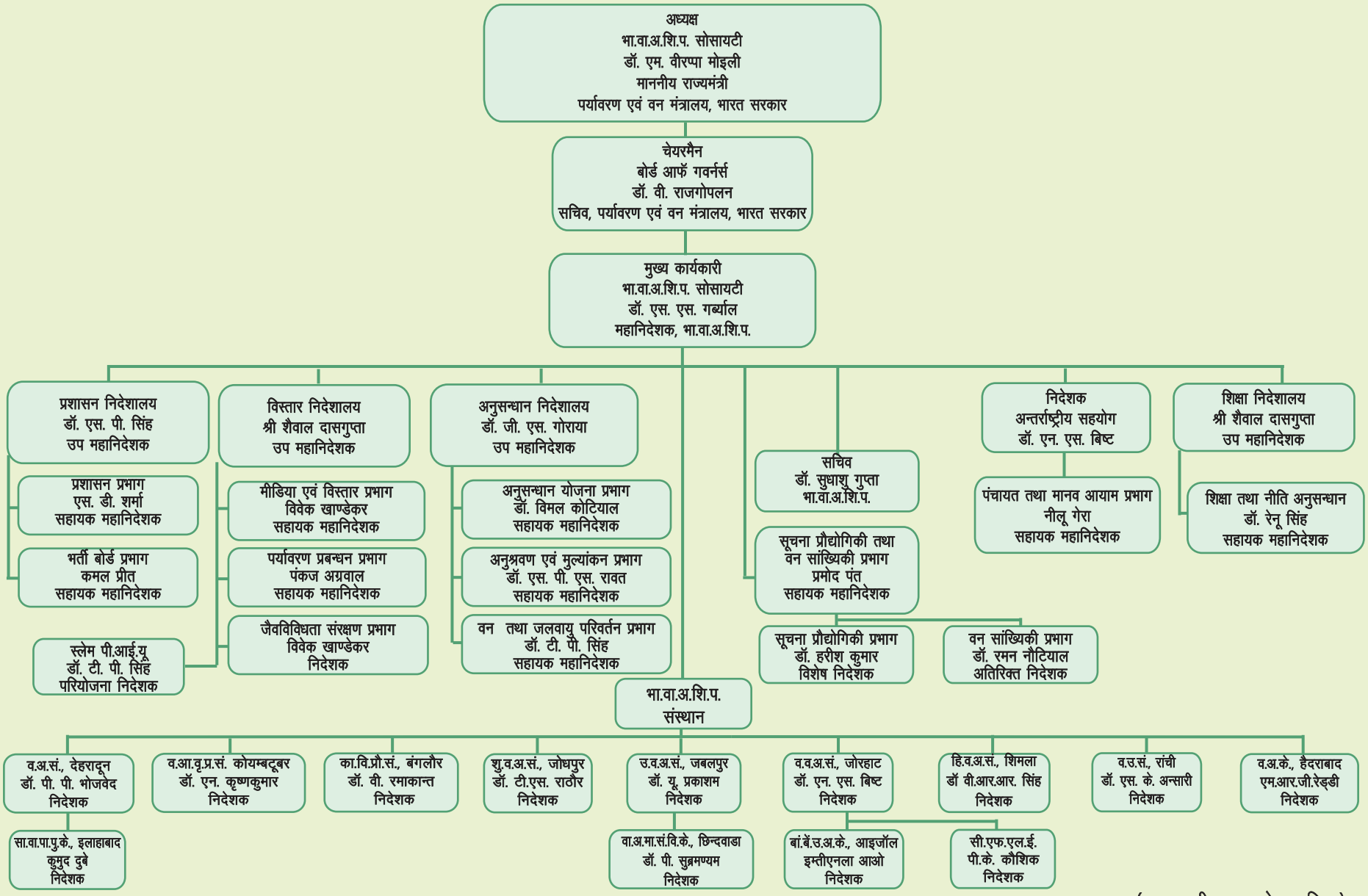

(16 जनवरी 2014 को यथास्थित)